देहातीजीवन

भारत संसार में सदा से मान प्राप्त करता आया है और मान प्राप्त करता रहेगा। दूसरे देश इस को सोने की चिड़िया कहते हैं क्योंकि सदा से धनवान है और अन्य देश इसके धन को लूटने की ताक लगाये रहते हैं। यहाँ पर कई देशों के यात्री आये और आकर यहाँ के रहन सहन को देखा चाल चलन की पड़ताल की यहाँ की उदारता देखकर चकित हो गये और यहाँ व्यापार करने के लिये निवेदन किया। राजा हर्षवर्धन के पश्चात कुछ हिन्दू जाति प्रति दिन गिरती जा रही है। सुलतान, तुर्क, मुगल बादशाहों ने काफी समय तक शासन किया। मुसलमानों के पश्चात अंग्रेज और फ्रांसीसी आये। अंग्रेजों ने तो यहाँ करीब दो सौ वर्ष शासन किया और जहां तक हो सका भारत को गुलाम बनाये रखने का प्रयत्न किया। विद्या का ढंग तो उलटा ही दिया जहां तक हो सका उन्होंने हिन्दू जाति की समाप्ति करनी चाही परन्तु वे हिन्दुत्व को खतम करने में असफल रहे और महात्मा गांधी की अहिंसा रूपी तलवार के सामने अधिक समय तक न ठहर सके।

परन्तु कभी किसी भी शासक ने भारत के तत्व को नहीं पहचाना यद्यपि उस तत्व को जान पाते तो कदापि भारत स्वतन्त्र न हो पाता क्योंकि भारती बड़े भुलक्कड़ हैं जैसा दूसरे को देखते हैं वैसा करने का पूर्णतः यत्न करते हैं वे संसार से पीछे हैं।

असल भारत देहात में रहता है कोई भी राजा आया और यहाँ के गिने चुने शहरों को धनाढ्य घरानों के रहन सहन को देखकर खुश हो गया और कुछ देखने की अभिलाषा ही नहीं की। जिस प्रकार यदि किसी को पहले अच्छा भोजन कराने के बाद सूखे रूखे भोजन को और देखने की आवश्यकता नहीं होती उसी प्रकार विदेशी यात्रियों ने भी देहली, कलकत्ता, बम्बई जैसे शहरों को देखा और भारत को निबन्ध में लिख दिया।

परन्तु यदि आप भारत आर्थिक, सामाजिक हालत देखना चाहते हो तो गरीब किसानों [illegible]

उनकी असल हालत देखो तब आपको पता होगा कि भारत की क्या दशा है वह कैसे हल आई जा सकती है।

आज जहां तक हो सकेगा मैं आप को उनकी असल हालत पर रोशनी डालूंगा।

भारत एक कृषि देश है इस में अधिक लोग खेती की उपज पर निर्भर हैं और एक चौथाई को छोड़कर सब देहातों में रहते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार भारत में छः ऋतु माने जाते हैं, ग्रीष्म, शीत, हेमन्त शिशिर, वर्षा और वसन्त। प्रत्येक ऋतु दो मास तक रहता है परन्तु बड़े ~~और तीन~~ चार ही हैं गरमी, सरदी वसन्त और वर्षा।

वैसे तो भारत में तीन खेती मानी जाती हैं परन्तु दो तो सब मानते हैं खारीफ और रबी — खारीफ वर्षा ऋतु में आषाढ़ आश्विन के महीने में बोई जाती है और कार्तिक के महीने में काटी जाती है। इस में ज्वार, बाजरा मूंग मोठ इत्यादि बोई जाती हैं इसे खारीफ कहते हैं।

जिस दिन पहला दिन होता है उस दिन प्रत्येक किसान अपने हल को प्रणाम करके और बोना आरम्भ करता है उस दिन प्रत्येक घर त्यौहार मनाया जाता है और उस को हल सातीया कहते हैं। इस में बहुत सारे कृषक के काम आने वाले औजार की आवश्यकता पड़ती है उनके नाम ये हैं:- हल, जूआ, फाला, कुल्हाड़ा, खुरपा, दान्ती, जैली, दरान्त, जेली, चांसगी और [illegible] मांझा इत्यादि। पाले आदि से खेत के चारों ओर हद बनाई जाती है जिसे डोला कहते हैं। पानी सींचने के लिये रहट (Persian wheel) [illegible] है एक नाली द्वारा पानी [illegible] है जिसे धोरा कहते हैं पानी सींचने के लिये क्यारी [illegible] पानी इसी [illegible] में [illegible] हैं [illegible] उसे नाका [illegible] कहते हैं।

अपने वासियों के रीति रिवाज सर्वमान्य हैं उनके कारण ही वे दिन प्रतिदिन गरीब बनते जा रहे हैं जैसे चाहे घर में पैसा हो या न हो लड़की के विवाह में २०० से कम बराती नहीं आयेंगे दहेज भी पूरा देना पड़ेगा। इसी तरह लड़का होने पर सारे गाँव को सब प्यारे रिश्तेदारों को जिमाना जुठाना आवश्यक है।

आसोज के पूर्व पक्ष में सारे घरों में श्राद्ध का वर्तन होता है खीर आदि बनाकर ब्राह्मणों को गौ, खिलाया जाता है फिर सूर्य आदि को पानी देकर स्वयं खाना खाते हैं कहते हैं कि कर्ण कनागत कहलाये अर्थात राजा कर्ण ने भी बहुत दान किया था उसने सोना चाँदी इत्यादि सब कुछ दान कर दिया परन्तु जब मृत्यु के उपरान्त वह स्वर्ग में गया तो उसे वहाँ भी सोना चाँदी मिला परन्तु उसे भूख लगी थी उसने अन्न मांगा तो उत्तर मिला कि आपने सोना दान किया था वह सब मिला है अन्न आपने दान नहीं किया तो फिर उसने पन्द्रह दिन दान के लिये मांगे और खूब अन्न दान किया उसी समय से ये कनागत मनाये जाते हैं जिनको हम पितृपक्ष कहते हैं।

इसी पक्ष की अमावस्या को सायंकाल प्रत्येक घर में भीत (दीवार) पर एक औरत की मूर्ति मिट्टी के बनाये हुए तारों से बनाई जाती है इसकी पूजा करते हैं नारी जाती इसके बारे में अच्छे अच्छे गाने गाती है उसके लिये अच्छे खाने बनाकर खिलाती है जिस प्रकार नवोढ़ा का आदर मान होता है ठीक उसी प्रकार दशहरे तक उसके बारे में गान होते हैं। दशहरे के दिन स्त्री उसके कुछ मट्टी के बनाये जौ नरात, मुँह इत्यादि को घड़े (बासन) के चारों ओर घड़े [illegible] में के जोत जलाकर गाँव के जोहड़ में तैराते हैं परन्तु लड़के उसे पार नहीं होने देते और उसे रास्ते में ही फोड़ देते हैं कहते हैं कि यदि वह पार उतर जायेगी तो अकाल पड़ेगा नारी जाती उसे पार उतारने का पूरा तथा प्रयत्न करती है। 'साँझी आई साँझ ने मेल बसन्ता पूत' आदि गाने गाये जाते हैं बहुत लोगों की राय में यह कोई देवी है जिसकी पूजा प्रत्येक घर में होती है बनिया लोग इसे लक्ष्मी मानते हैं और बड़ा सम्मान करते हैं अन्य साधारण मानते हैं। कुछ इसे जाति की चमारी अथवा जुलाहिन मानते हैं क्योंकि यह जाति इस को न मानती है न उसकी रखवाली अपने घर में बनाती है इसलिये ठीक निश्चय नहीं कि यह असल में यह थी कौन!

दुसहरा शब्द संस्कृत का शब्द है मेरी सम्मति में यह इसी शब्द से बिगड़ा है

दश + हर — दशहर (दश मन हरण नाश) अथवा दसहरे के दिन श्रीरामने दशहर रावण को मारा था इसीलिये इस का नाम भी दुसहरा पड़ गया।

उस दिन गाँवों में कुश्तियाँ होती हैं खेल इत्यादि होते हैं बड़ी धूम धाम से यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन कुछ अजीब तरह की रस्म होती है। गोबर की पत्ल थापी बनाई जाती है। अमावस्य के दिन सांझ काल को जौ बोये जाते हैं और नौवें दिन उखाड़े जाते हैं बहन अपने भाइयों के कानों में नौरते रखती है ब्राह्मण अपने यजमान के यहाँ जाता है और नौरते देता है यजमान उसको दक्षिणा देता है दसवें दिन दुसहरा मनाया जाता है।

नौ नौरते दसवा दुसहरा — फिर कातिक राजा आजाते हैं जिस दिन ये नौरते बोये जाते हैं उसी दिन से रबी की फसल बोई जाती आरम्भ हो जाती है।

फिर कातिक (कार्तिक) के महीने में सारे देहात में ~~सब~~ नारी जाती प्रातःकाल चार बजे उठकर जोहड़ में सब पूरा महीना स्नान करती हैं गाने गाये जाते हैं यदि जोहड़ का पानी गन्दा या नहाने योग्य नहीं होता तो कुएं पर नहाती हैं, और पूर्णमा के दिन जमुना या गङ्गा में स्नान करके इस नियम को पूरा करती हैं। गाने इस प्रकार हैं 'आया गङ्गा जी का नहान, नहान चलो मेरी मान'

साँझी का गाना

हां मेरे सुसर तेरे ठाड़ी लागें कचहरी गुमान साँझी,
हां मेरे जेठा तेरा खारी कैसा पेटा गुमान साँझी,
हां मेरे देवर तेरा काले बुलद का जेवड़ा गुमान साँझी
अरी मेरी नणादी तेरी तोड़े धाड़ा हूं आनन्दी गुमान साँझी
हां मेरे नन्दोइया तेरे होंडी मार, डोबूंया गुमान साँझी
अरी मेरी सासु तेरी बिल बिल तोडूं पांसूं गुमान साँझी,
हां ~~अरी मेरी~~ जेठानी तू आरने चुगती होंडी गुमान साँझी
हां दुरानी तू हारों चिकती आई गुमान साँझी।

ज्वार, बाजरा की रखवाली करते हैं तो चिड़िया इत्यादि उड़ाने के लिये एक वस्तु बनाते हैं जिसे गोफिया कहते हैं। एक वृक्ष के ऊपर जो खेत के बीच में या औले पर होता है उसपर रहने के लिये बैठने की जगह बनाते हैं जिसे डामचा कहते हैं।

इस तरह खरीफ आषाढ़ में बोई जाती है और कार्तिक में काट ली जाती है वैसे ही रबी कार्तिक में बोई जाती है और वैशाख में काटी जाती है।

वैसाख की अमावस्या के पश्चात जो तीज आती है वह बड़ी प्रसिद्ध है और आखातीज के नाम से पुकारी जाती है उस समय से दो तीन महीने जब तक वर्षा नहीं होती देहातों में ब्याह शादियां बड़ी धूम धाम से होती हैं।

क्योंकि उस समय लोग खाली होते हैं।

ब्याह आदि में देहाती बहुत सा पैसा खर्च कर देते हैं वे लोग सोने चांदी के बहुत से जेवरात बनवाते हैं जिन के नाम ये हैं, हाथ में पहनने के:- पहुंची, छन, कडूला, गोंठी, हथफूल, गजरा, पतकड़ेल, टाड़े। गले को:- हार, झालरा, कण्ठी, टीप, माला, चम्पाकली, हंसली, सांकल, पतरी, गुलीबन्द और काले मोतियों की माला। गले से ऊपर —— बुजनी, झुपला, तलातल ताना, बुंदे, झुमके, बाली, सार, जोड़े और कुंडल का छाजा। सर के लिये बोरला, टीका। नाक के:- कांटा, पुरली, मुरकी। पांओं के लिये:- बांक, तेवरी, कड़ी, गठियों के, झांझन, पायल, पाजेब, पाती, ताती, घुंघरू के, बिछियों के पलके, फूलपाती, चुड़ी झांझन, रमझोल, नाड़ा, नागड़ी, पोंछी, हंसलीया, चुटकी।

घाघरे:- कलका, काला, छींट, दामन, डाकपाता, पीपलपत्ता, फूलझड़ी, कबूतरी, मोटर पैंया, सूवा दामन, लहरिया, गुलाबी हरी कोई।

ओढ़ने:- लाल बायल, काली, सफेद, पीली गुलाबी हरी, ओरया चकवरी, कबूतरी।

कुरते:- फिट कुरता, बंगाली, जाली, अंगी, ——

इन वस्तुओं पर लोग अपनी सारी सम्पत्ति समाप्त कर देते हैं।

भारती किसान भूत, प्रेत में बड़ा विश्वास करते हैं। पर्व (त्यौहार) मनाये जाते हैं गीत अलग अलग ऋतु में अलग अलग गाये जाते हैं।

सावन की गीत, फाल्गुन के गीत, कार्तिक (गंगा स्नान) के गीत।

जन्मदिन के गीत, शादी के गीत। पूजा पाठ में बड़ा विश्वास करते हैं किसी देवी देवता की पूजा करते झुण्ड के झुण्ड जाते हैं उस दिन सब नहा धोकर अलग साफ सुथरे कपड़े पहन कर जाते हैं। मेले इत्यादि बहुत होते हैं मेलों पर कुश्ती, श्याम के समय हुक्का भरकर चौपाल में बैठकर रामायण महाभारत की चर्चा करना इत्यादि।

देहाती बोली। — भारत में प्रत्येक प्रांत की अपनी अलग भाषा है 'दस कोस पर पानी बदले, दस कोस पर बानी' संस्कृत से बिगड़ी हुई है संस्कृत भाषा है। आँख:- अक्षि तो संस्कृत का शब्द है परन्तु देहात में इसका बिगड़कर आँख होना तत्सम अर्थ देने वाला ही है।

अड्डा, उड्डा, कड्डा, ये अग, तग कुग से बिगड़े हैं। Break fast के समय को कलेवा कहते हैं यह भी संस्कृत के ही शब्द से बिगड़ा है।

सन्ध्या से बिगड़कर साँझ हो गई।

'जा रहे डौंडे ने डूँडे में मूड आ' 'बीजा पर आ कुत्ता ने उसका दूध खा डाह दिया' 'डारे के बात में खूँटा टांग दे' इत्यादि बोली है जिसको संस्कृतज्ञ भी नहीं समझ पाते।

देहाती संगीत कला एक निराली है वह किसी भी अन्य प्रान्तीय की समझ से बाहर है साँग इत्यादि का समझना अति दुष्कर है। ये चाहे वे साहित्यिक हैं। पद्मावती सब ने सुना है पद्मावत जायसी का लिखा हुआ है परन्तु उसी कथा के देहाती

साँगी जब साँग के रूप में दिखाते हैं तो समझना कठिन है।

इतराजा ने मकड़ीय लगा दई.

मायकेरीते गंजो सें औघली होनी कां ग्लकें ते आया मेरा को

इतराजा ने मकड़ी लगा देहु

ऊठां ने आखामाखा हैं मां मेंडी भादवाजी होजो कोइ मैं सैयां नेआराय

जोंड बंठियांते आल सासरा।

ऊठां ते चाल लिया है मां मेंडी ओजार होजी कोई मैं साया ते चल्ली दुख

बंठियां ने तजदिया सासरा जो पीहट में बैठे हैं मा मेंडी तों रिवल

होनी कोई रिवल कवेंलका फूल माना कें भातरी न्यो रहे

होनी कोई गोलड़ी में भी

सासरे मे वहुअड न्यो रहे जो होजो कोई जाने कडाई मे तेला।

कुछ इतिहासिक बातें

देहात में सतिमा तो होता नहीं परन्तु वे जो मनोरंजन की बातें होती हैं वह स्वांग, भजन इत्यादि होते हैं जो कि साहित्यिक होते हैं जैसे हीर-रांझा सब ने सुना होगा यह इतिहास में भी आता है परन्तु देहात में इस बारे में आप बच्चे बच्चे से पूछ सकते हैं :- लैला-मजनू हीर-रांझा, लीलो-चमन बड़े प्रसिद्ध जायसी का पद्मावत यहां स्वांग के रूप में बड़े मार्मिक ढंग से दिखाया जाता है।

आल्हा :- गढ़ मोहबा एक गांव है वहां पर आल्हा ऊदल नामक दो वीर भाई-भाई आदमियों की जोड़ी थी उनकी शक्ति का वर्णन मैं लेखनी की शक्ति से बाहर है वे खाते इतना थे कि उनकी खिचड़ी में सौ लाख मन हींग पड़ता था। आल्हा एक ग्रन्थ है देहात में लोग चौमासे के दिनों में इसे गाते हैं आल्हा गाने का ढंग ही निराला है और इस ढंग के कारण इस का नाम भी आल्हा पड़ गया।

देहात में [illegible] भी कहानियां होती हैं जो कि साहित्यिक प्रचार

सुन प्राणपति एक बात कहूँ पर नारी धूँ जाना ठीक नहीं।
पहलें धर्म घटैं दुजैं निन्दा बढ़ैं तीजैं लोक हंसाता ठीक नहीं ......
पहला चाम नहीं दुजैं रूप नहीं तीजी चोरी का पीना ठीक नहीं.
सुन प्राणा पति एक बात कहूँ पर नारी धूँ जाना ठीक नहीं
....

नृसी भक्त का भात

मैली कसार लंका हरनन्दी चाली, होली नरवरगढ़ की नाही हो राम
रोही जाती तें होली पाली बूझें नृसी भक्त किस पावें हो राम
नृसी भक्त अटलान के पावें काका ताऊओं में चली बाहुये हो राम
दूर तें देखी हरनन्दी आवती नृसी बैठ्या हो गये मेरे राम
दोनों हाथों से सिर पुचकारा काकी जी पुचकारन आई हो राम
तेरी चेतती का बाबू ब्याह रचाऊं आज मैं तो भात भी चाहिये हो राम
कौन किसै के भाई और बाबू कौन किसै के भाई हो राम
धुने मैं पडूंगी बाबू जल मैं मरूंगी नरवरगढ़ में न जाऊंगी हो राम
दोर जीजानी बोली भौं के तले पत्थर आवे हो राम
टूटी सी गाड़ी रामजी ढाडे ढाडे बैल नृसी भक्त गढ़वाला हो राम
चार गढ़ी तक पत्थर बरसें टूटेंगे महल अटारी हो राम
चार गढ़ी तक तीयल बरसें ढावेंगी दोर जीजानी हो राम
चार गढ़ी तक असर्फी बरसें ढावेंगी लोग लुगाई हो राम

कड़वी कचरी हे मां मेरी बेल की अजी कोरा कड़वा सासरे का बोल
मिठी कचरी हे मां मेरी बेल की हांजी कोरा मीठा मायड़ का बोल
बहुत दुहेला हे मां मेरी सासरा, इस शमन हे मां मेरी मायका हांजी
कोरा हरी बनी के मौर बहुत दुहेला हे मां मेरो सासरा
सास मरी तें [illegible] सौं [illegible] हांजी [illegible] आया मेरा मे[illegible]

प्रचार करती है। देश उद्धार उनका उद्देश्य है जैसे हनुमान की कथा अर्जुन की कथा इस प्रकार की कथाओं में वीरों का बखान है जिसको सुन कर सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

भजनों का प्रमुख उद्देश्य होता है लोगों को पाप कर्मों से हटाकर भगवान की भक्ति की ओर लगाना जैसे! - हरी ओम नाम भूला जा, तू कैसा इन्सान रे।

बहरा क्यों बने रह सुनले मैं खोलूं तेरे कान रे।

कौल कै ते आया था कौल कै जाना, आगली न पीछली बीच की सै तान रे

बहरा क्यों बने से बन्दे मैं खोलूं तेरे कान रे -

बहुत सा कमाया तेरा पूरा ना पटया, तैंने ओम नाम रटया

दो दिन का महमान रे बहरा क्यों बनसै मैं खोलूं तेरे कान रे।

देहात की रागनी बड़ी प्रसिद्ध है उनको गाने की तर्ज भिन्न भिन्न है सांगियों में, चन्द्र बादी, लखमीचन्द, सुलतान बाजे, हुकमचन्द खुण्डा, मांगे इत्यादि प्रसिद्ध है।

इनसब में लखमीचन्द सबसे उच्च पद पर आसीन है उसे लोग कवि मानते हैं कहते हैं वह सांगों में किसीभी वस्तु पर अकस्मात रागनी जोड़ देता था उसकी बातें ज्ञानभी होती थी ओर सरस्वती का वरदान था।

गौ शाला इत्यादि आज भी देश में बहुत सारे जोत है अधिक किसान गौ को माता रूप में देखते हैं और उस को सेवा शुश्रुषा करते हैं प्रत्येक घर में इस की पूजा होती

Same

ઉંચાં રાની કો સ્નાન કે કિસીકે દેતે રહે મેરે રામ

જો ઘર અપને હો ચાંદ ખિલાના લિયે મેરે રામ

દેવ જીમની કો બીર સાસને ગાલાયે મેરે રામ

જો ઘર અપને હો ઢોલાય જીમા લિયે મેરે રામ

દેવ ~~[illegible]~~ ચાની કા રવત સાસને ગાલાયે મેરે રામ

જો ઘર અપને હો કાટ બીધા લિયે મેરે રામ

દેવ પરાયા દુધ સાસન ગાલાયે મેરે રામ

જો ઘર અપને હો ગાઉ બિલો લિયે મેરે રામ

દેવ પરાયા પૂત સાસને ગાલાયે મેરે રામ

જો ઘર અપને હો ગોદ ખિલાના લિયે મેરે રામ

૯.

રામચન્દ્ર બને બાસ ડિગરે મેં હમને દુગ કાર જી

બારા ઊપર વાલા પારડુ પરડે ઊપર પોર જી

મોડયા કા મૈસ મા રાવણને સિમયાલો લિયા હોય

બિચ્છા બાલો મેહલો કી રાની મર બાલી મોતિયોકોલર

કોડી હોના બિચ્છા બાલી, મોડયા ને લાઈ ઉઠાય

જો ઉતારી નર બાસ કોઈ નહીં હમારે પાસ જી

તાવલી, તાવલી, ચાલ મોડયા કોઈ નહીં હમારે પાસ જી

હરી હરી ચોડી, ઝરે ઝરે હાથ પહરે સીતા માર જી

મોટી મોટી ઓમલ, સીતાજીના સુરમા સાર સીતાના જી

લૂલા સૂરા દામન પહરે સીતા માર જી

પીલી પીલી બેસર ઝૂરા ઝૂરા ઝુલખડા પહરે સીતાના જી

~~[illegible]~~ બિવરાવરા ને લેરા પારા લાયા તોબ ચઢાય જી

લાડુ તોડ બિલાડુ તોડી લાયા સીતા માર જી

२. ओ मेरी सासड़ी के आरः धारः जामर ही कमाई।
मैं तेने कुछ के तेरः भाई।
मेरः पाँच, पचास भतीजे, नौ दस भाई।
साँझा

३. अरे बीरा बगड़ बीचाले चन्दन वाँ की गोपीचन्द नाहन सींजोया हो राम
ओ बैठ बादलतही, बिजली नाही बूंद कहाँ से आई हो राम।
रे बीरा छज्जे बैठी माता मिलन: उसकी आँसू आई हो राम।
बैठ लादे कुण्डी लादे सोटा गोपीचन्द अलख जगावे हो राम
रे बीरा आता ने जाइये पाछम जाइये देश मालवे न जाइये हो राम
आता न जो ता पाछे ते जाता देशमाल के जोगा हो राम
रे बीरा कोडी कोडी बगड़ बुहारे गोपीचन्द अलख जगावे हो राम
रे बीरा मासी कसी मालका नेरवा ली बहोता तात्ती पांडू हो राम
रे बीरा भरी थाली मोतियां की लाई ले रे जोगी भिक्षा हो राम

४ कार्तिक के.

राम कुआ पाँचूं पनहारी नीर भरें सब न्यारी न्यारी
टूट गई लेजू बिखर गया पानी किलक रही पाँचों पनहारी
जा, रे भैरव तने आंगना भजा कदे न साधा कदी न करी रे
न कदे हर का नाम लिया रे चलो रे भैरव गंगा नहान चलें रे
यो दुनिया का हेड़ ऐसा मेला
साँझ हुई मेला बीखर लिया रे।

५ मिसर बैठे मेरे बार पोथी पतरा खोल के मेरे राम
देख मिसर मेरा राम के के मेरे कम लिखे मेरे राम
अन्न, धन, भरा कुनबा पुत्तर तेरे कम नहीं मेरे राम
इतनी कुल के लखात आसंग पाती ले पड़ी मेरे राम
बातें तैं उधे भगवान आज उदासी क्यों पड़ी मेरे राम
मिसर बैठे मेरे बार पोथी पतरा खोल के मेरे राम